International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-09-2022, Accepted: 18-09-2022, Published: 04-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 32-35

भारतीय पारम्परिक चिकित्साओं का अभिन्न अंग यूनानी चिकित्सा: एक परिचय

मुहम्मद वसीम अहमद, रीशा अहमद, शुऐब अहमद अंसारी, पवन कुमार सागर, अस्मा सत्तार खान
औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, के.यू.चि.अनु.प., आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पीसीआईएम एंड एच कैंपस, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारतं

सारांश
मेरे महान देश भारत के बारे में पूरा विश्व जानता है की हमारी सभ्यता कितनी सुद्रढ़ और प्राचीन है । इसके साथ ही सभी को ज्ञात है की हमारी परम्परा रही है की जो हमारे पास आया उसको अपनाया है। इसी परम्परा के अनुसार यूनानी चिकित्सा के भारत आगमन पर भारतीय संस्कृति ने चिकित्सा की इस प्रणाली को विदेशी होने के उपरांत भी अपने में समाहित किया। यूनानी चिकित्सा पद्धति दुनिया में चिकित्सा की एक पारंपरिक और सबसे प्राचीन प्रचलित प्रणाली है। यूनानी चिकित्सा का आधार हिप्पोक्रेट्स के चार–अख्लात का सिद्धांत है। यह मानव शरीर में चार–अख्लात (ह्युमर्स) की उपस्थिति मानते हैं जोः रक्त (दम), कफ (बलगम), पीला पित्त (सफरा) और काली पित्त (सौदा) हैं। यूनानी चिकित्सा में जीवित मनुष्य के लिए छह कारक आवश्यक हैं। इसमें आमतौर पर उपचार के चार मुख्य तरीकों का उपयोग किया जाता है जैसे इलाज–बिल–तदबीर (रेजिमिनल थेरेपी), इलाज–बिल–गिज़ा (डाइटो थेरेपी), इलाज–बिल–दवा (फ़ार्माको थेरेपी) और इलाज–बिल–यद (सर्जरी)। यूनानी चिकित्सा के अनुसार मानव शरीर में सात मुख्य घटक शामिल हैं। इस पत्र में, लेखकों ने यूनानी चिकित्सा पद्धति के परिचय, सिद्धांत, निदान, रोग चिकित्साओं, अवधारणाओं और कार्यप्रणाली को शामिल किया है।

मूल शब्दः यूनानी चिकित्सा, इलाज, सिधांत, हिप्पोक्रेट्स और मानव शरीर

प्रस्तावना
यूनानी चिकित्सा, स्वास्थ्य और उपचार की एक विज्ञानीय पद्धति है जो भारत की परंपरागत चिकित्साओं के साथ मिल चुकी है और भारत ने इसे चिकित्सा के इस रूप का अभ्यास करने वाले अग्रणी देशों में से एक बना दिया है। यूनानी चिकित्सा पद्धति की उत्पत्ति लगभग 2500 साल पहले यूनान में हुई थी और इसकी नींव हिप्पोक्रेट्स ने रखी थी। ग्रीको–अरबी चिकित्सा की एक परंपरा, यूनानी चिकित्सा में जड़ी–बूटी–जीव–खनिज आधार हैं। ये पद्धति मूल विज्ञान होने के अलावा, यूनानी दर्शन और चिकित्सा के सिद्धांतों का एक समृद्ध भंडार भी रखती है जो सामान्य रूप से चिकित्सा और विज्ञान के क्षेत्र में मूल्य रखता है।[1]

अरबों ने अपने योगदान के माध्यम से चिकित्सा के यूनानी साहित्य को अपने स्वयं की प्रणाली में बढ़ावा प्रदान किया। उसी के लिए, उन्होंने पैथोलॉजी, थेरेप्यूटिक्स, भौतिकी, रसायन विज्ञान, एनाटॉमी, फिजियोलॉजी, वनस्पति विज्ञान और सर्जरी की अवधारणाओं का समाविष्ट किया। इस को मध्य पूर्व के देशों और एशियाई देशों द्वारा पारंपरिक प्रणाली के समकालीन रूप के कारण समृद्ध किया गया था। अरबों ने भारत में यूनानी प्रणाली का परिचय कराया जिसने कुछ ही समय में भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इस पद्धति को दिल्ली के सुल्तानों ने संरक्षण इस प्रकाट दिया की यूनानी विद्वानों में से कुछ को अदालत के चिकित्सकों और राज्य कर्मचारियों के रूप में काम पर रखा था।[1]

हालांकि, ब्रिटिश शासन के दौरान प्रणाली को एक बड़ा झटका एलोपैथिक प्रणाली की शुरुआत से लगा। लगभग दो शताब्दियों तक उपेक्षा का सामना करना पड़ा। लखनऊ में अजीज़ी परिवार, दिल्ली में शरीफ़ परिवार और हैदराबाद के निजाम के प्रयासों के कारण ब्रिटिश काल में यूनानी चिकित्सा का अस्तित्व बाकि रहा। इस प्रणाली के पुनरुद्धार में हकीम अजमल खान की मत्वपूर्ण भूमिका रही, जिन्होंने वर्ष 1916 में एक आयुर्वेदिक और यूनानी तिब्बिया कॉलेज और 1911 में हिंदुस्तानी दावखाना की स्थापना की। इसका उद्घाटन महात्मा गांधी द्वारा 13 फरवरी, 1921 को किया गया। स्वतंत्रता के बाद, यूनानी प्रणाली को अन्य पारंपरिक चिकित्साओं के साथ–साथ प्रोत्साहन मिला। भारत सरकार ने इस प्रणाली के चौतरफा विकास के लिए बहुत उपाय किए और विभिन्न शोध संस्थानों, शैक्षणिक संस्थानों, परीक्षण प्रयोगशालाओं और अस्पतालों की स्थापना की और मान्यता प्राप्त चिकित्सकों को नियुक्त किया।[2]

वर्ष 2014 में भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंदर मोदी जी द्वारा आयुष विभाग को मंत्रालय का दर्जा मिला और उसके बाद इन पद्धतियों का और विशिष्ट रूप से यूनानी चिकित्सा का विकास जगजाहिर है। वर्तमान में, भारत उन अग्रणी देशों में से एक है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति का अभ्यास करते हैं और जो यूनानी शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान केंद्रित करने वाले संस्थानों की सबसे बड़ी संख्या रखता है। निरंतर उपेक्षाओं बावजूद, यूनानी चिकित्सा न केवल बच गई है, बल्कि यह चिकित्सा की अन्य प्रणालियों को भी पूरी तरह से पूरक करती है। संपूर्ण मानव शरीर के रोगों का उपचार यूनानी चिकित्सा पद्धति द्वारा किया जाता है। यूनानी चिकित्सा यकृत, त्वचा, प्रजनन प्रणाली, मस्कुलोस्केलेटल और प्रतिरक्षा संबंधी विकारों के दीर्घकालीन रोगों के उपचार के लिए अत्यधिक प्रभावी सिद्ध हुई है।[3]

यूनानी चिकित्सा प्रणाली के–सिद्धांत, अवधारणा और परिभाषा
यूनानी, स्वास्थ्य और रोगों की विभिन्न अवस्थाओं के उपचार से संबंधित एक बृहद् चिकित्सा प्रणाली है। यह मुख्यतः प्रचारक, उपचारात्मक, निवारक और पुनर्वास संबंधी स्वास्थ्य सेवाओं पर केंद्रस्थ है। स्वास्थ्य और उपचार के वैज्ञानीय सिद्धांतों और विभिन्न समग्र अवधारणाओं पर इस प्रणाली के निदान और उपचार की आधारशिला हैं। पर्यावरण और व्यक्ति के बीच संबंध को ध्यान में रखते हुए है, मन, शरीर और आत्मा के स्वास्थ्य पर जोर देता है। यह प्रणाली व्यक्ति के स्वभाव को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त आहार और जीवनशैली के सुधार पर ज़ोर देती है। यूनानी चिकित्सा में, उपचार के कुछ महत्वपूर्ण भाग

न्यूट्राट्यूटिक्स, एरोमैटिक्स, कोस्मोसुटिक्स और अनुरूपी पद्धति हैं।

यूनानी तिब्ब (चिकित्सा) के सबसे महान विद्वानों में से एक इब्न–ए–सिना के अनुसार, तिब्ब वह विज्ञान है जो हमें सिखाता है की मानव शरीर कब स्वस्थ है और कब स्वस्थ नहीं। यूनानी तिब्ब, स्वास्थ्य के नष्ट होने और बहाल करने के उपायों के बारे में ज्ञान देता है। यूनानी चिकित्सा का आधार हिप्पोक्रेट्स के चार–अख्लात का सिद्धांत है। यह मानव शरीर में चार–अख्लात(ह्युमर्स) की उपस्थिति मानते हैं जोरू रक्त (दम), कफ (बलगम), पीला पित्त (सफरा) और काली पित्त (सौदा) हैं। यूनानी चिकित्सा के अनुसार मानव शरीर में सात मुख्य घटक शामिल हैं जो इस प्रकार हैं[4]:

1. अरकान (तत्व)

इसप पद्धति के अनुसार चार तत्व जल, वायु, पृथ्वी और अग्नि मिल कर मानव शरीर को बनाते हैं। प्रत्येक तत्व / अरकान के लिए, एक अलग स्वभाव है। हवा का स्वभाव गर्म और नम, पृथ्वी का स्वभाव ठंडा और सूखा, आग का स्वभाव गर्म और सूखा, और पानी का स्वभाव ठंडा और नम होता है।[5]

2. मिजाज (स्वभाव)

यूनानी चिकित्सा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष स्वभाव रखता है जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निदान और उपचार में व्यक्ति विशेष का स्वभाव आधार का काम करता है।

रक्त में चार अख्लात/ह्युमर्स के समामेलन की अलग–अलग मात्रा के आधार पर ही विभिन्न स्वभावों का वर्गीकरण और मूल्यांकन होता है। जिस कारण मिजाज़ की नींव में रक्त एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिये, किसी व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थिति को चित्रित करने हेतु तथा बीमारी की प्रकृति की भी पहचान करने में मिजाज़ मदद करता है।[6]

3. अख्लात (ह्युमर्स/पदार्थ)

तरल पदार्थों की उपस्तिथि के कारण ही मानव शरीर में ऊर्जा का उत्पादन, विकास, पोषण और मरम्मत जैसे कार्य संभव हो पाते हैं। मानव शरीर के विभिन्न अंगों में नमी बनाए रखने का कार्य भी ह्यूमर करते हैं। यूनानी चिकित्सानुसार पाचन के चार चरण हैं जो भोजन के अवतरण की अनुमति देते हैं। ये हैः गैस्ट्रिक पाचन, हेपेटिक पाचन, वेसल्स और ऊतक पाचन।

यूनानी चिकित्सा पद्धति में, माना जाता है की उचित आहार के द्वारा उच्च गुणवत्ता के अख्लात का उत्पादन होता है अनुचित आहार से तुच्छ गुणवत्ता के अख्लात का निर्माण होता है इसीलिए चिकित्सक पाचन की स्थिति और आहार को बहुत महत्व देते हुए, स्वास्थ्य और बीमारी दोनों के लिए व्यक्ति को विशिष्ट आहार की सलाह देते हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में अख्लात एक विशेष अनुपात में होते है जिनके संतुलन में कोई भी असंतुलन बीमारी का कारण बनता है, जिसका इलाज दवा और संतुलित आहार का सेवन करके किया जा सकता है।[4]

4. आज़ा (अंग/ऑर्गन्स)

आज़ा, मानव शरीर के विभिन्न अंग हैं जो शरीर के प्रभावी कामकाज के लिए जिम्मेदार हैं। शरीर के समग्र स्वास्थ्य को प्रत्येक अंग का स्वास्थ्य प्रभावित करता है, और अंगों में कोई भी रोग स्वास्थ्य संतुलन में असंतुलन पैदा करती है।[7]

5. अरवाह (स्पिरिट)

रूह या आत्मा एक गैसीय पदार्थ है, जो मानव शरीर की सभी चयापचय गतिविधियों में सहायता करता है। सांस के द्वारा ली गयी हवा, शरीर के सभी अंगों के प्रभावी कामकाज के लिए ऊर्जा के स्रोत के रूप में कार्य करती है। मानव शारीर में रूह, अखलात लतीफा को प्रयोग कर ऊर्जा (क्ववा) पैदा करता है।[8]

6. कुवा (पावर)

कुवा तीन प्रकार के हैं:

- कुवा तबैय्याह (प्राकृतिक शक्ति)
- कुवा नफ़्सानियाह (मानसिक शक्ति)
- कुवा हैवानिया (महत्वपूर्ण शक्ति)[9]

7. अफाल (कार्य)

मानव शरीर के सभी अंगों की गति और उचित कार्य को अफाल कहते है। यदि सभी अंग उचित आकार में हैं और कुशलता से काम कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि शरीर स्वस्थ है।[9]

निदान

इस चिकित्सा पद्धति में अवलोकन और शारीरिक परीक्षण नामक कारकों पर निदान निर्भर करता है। कोई भी रोग जो किसी व्यक्ति में विकसित होता है वो निम्नलिखित का परिणाम होता हैः

- वह किस चीज से बना है ।
- वह किस प्रकार के स्वभाव, संरचना और संकायों का स्वामी हैं ।
- कारक जो उसे बाह्य रूप से संचालित करते हैं ।
- अपने शारीरिक कार्यों को बनाए रखने और सर्वोत्तम संभव तरीके से व्यवधानों को खत्म करने के लिए प्रकृति का प्रयास।

विस्तृत उपचार योजना बनाने हेतु निदान में रोग के कारणों की विस्तृत जांच शामिल होती है जिस के लिए, चिकित्सक नाड़ी को पढ़ता है और मूत्र और मल की जांच करता है। पल्स या नब्ज धमनियों का वैकल्पिक विस्तार और संकुचन है। इन परीक्षणों के अलावा, चिकित्सक निदान करने के लिए अन्य पारंपरिक तरीकों जैसे पल्पिटेशन, पर्कसन, इन्स्पेक्स्न, और ओकलटेशन का उपयोग भी करते हैं।

रोगों की रोकथाम

यूनानी का मानना है की रोग का उपचार करने से बेहतर है की रोग की उत्पत्ति पर ही अंकुश लगा दिया जाये। जिसके लिए ये बीमारी की रोकथाम पर जोर देता है और जीवन के छह आवश्यक कारकों (असबाब–ए–सित्ता ज़रूरिया) के माध्यम से मौजूदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। छह कारक हैं:

1. वायु (अल हवा)
2. खाद्य और पेय (अल माकूल व अल मशरूब)
3. शारीरिक व्यायाम और विश्राम (हरकत वा सुकून–ए–बदानी)
4. मानसिक व्यायाम और विश्राम (हरकत वा सुकन–ए–नफ़्सानी)
5. नींद और जागृत होना (नौम वा यकजा)
6. निकासी और प्रतिधारण (इस्तिफ़राग वा एह्तिबास)[10]

रोग चिकित्सा

यूनानी चिकित्सा पद्धति उत्कृष्ट उपचारों के प्रयोग द्वारा रोगों के उपचार से संबंधित है। मानव शरीर की प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ा कर रोग का मुकाबला करने और इसे पूरी तरह से समाप्त करने दोनों पर काम करती है यूनानी चिकित्सा। हर व्यक्ति की भिन्न शारीरिक संरचना, एक आत्मरक्षा तंत्र, पर्यावरणीय कारकों के लिए

एक विशिष्ट प्रतिक्रिया और अलग–अलग पसंद और नापसंद होती है इसलिए इस पद्धति में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को ध्यान में रखा जाता है। व्यक्ति विशेष की शारीरिक संरचना के अनुरूप ही ये निम्नलिखित प्रकार के उपचार प्रदान करती है:

- इलाज–बिल–तदबीर (रेजिमेंटल थेरेपी)
- इलाज–बिल–गिज़ा (डाइटो थेरेपी)
- इलाज–बिल–दवा (फार्माको थेरेपी)
- इलाज–बिल–यद (सर्जरी)[11]

रेजिमिनल थेरेपी

यूनानी में उपचार की एक विशेष विधि रेजिमेंटल थेरेपी है जो शरीरावस्था को बेहतर बनाने के लिए शरीर के रक्षा तंत्र को बढ़ाती है और अपशिष्ट को समाप्त करती है। विषहरण विधि के रूप में भी जानी जाने वाली यह थेरेपी अति प्रभावकारी सिद्ध होती है। यूनानी चिकित्सा पद्धति रोगों को ठीक करने हेतु सरल उपचारों का उपयोग करती है, जबकि कुछ जटिल बीमारियों में विशिष्ट तकनीकों के अनुप्रयोग की आवश्यकता होती है। इन तकनीकों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया गया है:

1. फस्द (वेनिसेक्शॅन)
2. अल–हिजामा (कपिंग)
3. हमाम (तुर्की बाथ)
4. तारिक (स्वेटिंग)
5. इदरार–ए–बौल (डायुरेसिस)
6. दलक (मालिश/मसाज)
7. कै (उल्टी/वोमिट)
8. इसहाल (परजिंग)
9. कअइ (कोटेराईज़ेशन)
10. रियाज़त (एक्सरसाईज़)
11. तालीक (लीचिंग)[12]

इलाज–बिल–गिज़ा (डाइटो थेरेपी)

यूनानी चिकित्सा पद्धति में, कुछ रोगों का उपचार केवल भोजन की मात्रा और गुणवत्ता में परिवर्तन करके किया जाता है। इस चिकित्सा की गतिशीलता को बहुत से यूनानी विद्वानों ने पुस्तकों के माध्यम से समझाया है जैसे:

- राज़ी द्वारा मकाला फिल अग़ज़िया
- रब्बन तबरी द्वारा किताब फिल अग़ज़िया
- राज़ी द्वारा किताब मनफे–इल–अग़ज़िया वा दाफ़–ए–मजर्रेहा
- रब्बन तबरी द्वारा मनाफे–उल–अतिमा वाल अश्रिबा

खाद्य पदार्थों में पोषण संबंधी गुणों के साथ–साथ रोगों के उपचार की भी बड़ी क्षमता होती हैं। उदाहरण के तौर पर, अंडे फ्रैक्चर के उपचार और गंजापन को ठीक करने में अति प्रभावकारी सिद्ध होते हैं।[13]

इलाज–बिल–दवा (फार्माकोथेरेपी/औषधीय चिकित्सा)

इलाज–बिल–दवा (फ़ार्माकोथेरेपी) एक प्रकार का उपचार है जिसमें प्राकृतिक औषधियों का व्यापक उपयोग किया जाता है। औषधियां जड़ी–बूटी, जीव या खनिज मूल की हो सकती हैं। यूनानी के अनुसार हर औषधि का एक विशिष्ट स्वभाव होता है इसलिए यूनानी चिकित्सा में रोगी के उपचार हेतु उसके स्वभाव पर जोर दिया जाता हैं। प्राकृतिक औषधियों के नगण्य दुष्प्रभाव के कारण चिकित्सक इन औषधियों का उपयोग करते हैं।

व्यक्तियों की तरह, औषधियों को भी गर्म, शुष्क, नम और ठंडे स्वभाव में वर्गीकृत किया जाता है। इसके अतिरिक्त, चिकित्सकों को सही प्रकार की औषधियों को देते समय, रोगी की आयु और स्वभाव, शक्ति और रोगों की प्रकृति और गंभीरता जैसे अन्य कारकों को भी ध्यान में रखा जाता है। नियत औषधियां सिरप, पाउडर, टैबलेट, जलसेक, काढ़े, माजून, खमीरा, आदि का रूप लेती हैं। इसके अलावा, यूनानी के तहत फार्माकोथेरेपी में वैकल्पिक औषधियों के नुस्खे के विषय में कुछ नियम हैं।[14]

इलाज–बिल–यद (सर्जरी/शल्य चिकित्सा)

चिकित्सा की यूनानी प्रणाली में, उपकरणों और तकनीकों में काफी विकास हुआ है। इस चिकित्सा को बेहतर उपचार विधियों की ओर ले जाने वाला माना गया है, जिनमें सर्जरी (इलज–बिल–यद) शामिल है। वर्तमान में, केवल मामूली सर्जरी चिकित्सा की इस प्रणाली का एक हिस्सा है।[15]

निष्कर्ष

यूनानी चिकित्सा पद्धति प्राचीनतम पारंपरिक पद्धतियों में से एक है । ये चिकित्सा प्रणाली सदियों से विभिन्न रोगावस्थाओं की रोकथाम और उपचार के लिए प्रयासरत है। इसमें उमूर–ए–तबैय्या के सात बुनियादी घटक (उमूर) जैसे अख्लात–ए–अरबा के सिधांत, औषधियों और व्यक्ति विशेष के स्वभाव का मूल्यांकन, और असबाब–ए–सित्ता ज़रूरिया के सिधांत का अनुसरण विभिन्न रोगावस्थाओं की रोकथाम और उपचार हेतु यूनानी चिकित्सा की प्रबलता को बढ़ाता है। इस पद्धति के सिधान्तो को अपना कर हम अपने स्वास्थ्य को बरकरार रख सकते हैं और यदि स्वास्थ्य खो चूका है तो उसको औषधियों और उपचार के चार मुख्य तरीकों जैसे इलाज–बिल–तदबीर (रेजिमिनल थेरेपी), इलाज–बिल–गिज़ा (डाइटो थेरेपी), इलाज–बिल–दवा (फार्माको थेरेपी) और इलाज–बिल–यद (सर्जरी) का उपयोग कर स्वास्थ्य को वापस हासिल किया जाता है।

संदर्भ सूची

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/यूनानी चिकित्सा पद्धति
2. http://autch.delhi.gov.in/history
3. https://www.timesnowhindi.com/india/article/ayush-story-of-a-department-turned-into-ministry-by-prime-minister-narendra-modi-government/295796.
4. Konstantinos Kalachanis, Ioannis E. Michailidis, The Hippocratic View on Humors and Human Temperament, European Journal of Social Behaviour,2015:2(2):1-5.
5. Anonymous. Theories and Philosophies of Medicine. 2nd edn. New Delhi: Institute of History of Medicine and Medical Research, 1973.
6. Qamrul Hasan Lari, Amin M.M.wamiq, Concept and Importance of Mizaj (temperament) in Unani System of Medicine,2020(1), 8-12, JICH.
7. Mohd Saqlain, Ferasat Ali, Aliya Parveen. Unani Concept of Development of Aza-E-Mufridah - A Comparative Study, International Journal of Advanced Ayurveda, Yoga, Unani, Siddha and Homeopathy,2018:7(1):536-544
8. Dr Syeda Aafreen Ghazali, Concept of ruh in unani system of medicine, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT),2021:9(2):1272-78, IJCRT.
9. https://www.unanimedworld.com/basics-of-umoor-e-tabiya
10. Mohd Nasiruddin, Mohd Zulkifle, Yashmin Khan, Asbab-e-Sitta Zaruriyya (six essential factors): An Unique tool for the maintenance of human health, International Journal of Herbal Medicine,2015:3(4):22-24.

11. Shabnam Ansari, Qamar Alam Khan, Dr. Rubi Anjum, Aisha Siddiqui and Kamar Sultana, Fundamentals of unani system of medicine - A REVIEW, European Journal of Biomedical and Pharmaceutical Sciences,2017:4(9):219-223.
12. https://www.nhp.gov.in/ilaj-bil-tadbeer-regimental-therapy-_mtl.
13. Fouzia Bashir and Jamal Akhtar, Ilaj bil ghiza (dietotherapy) in unani system of medicine- an appraisal, European Journal of Pharmaceutical and Medical Research,2018:5(12):582-588.
14. https://www.nhp.gov.in/ilaj-bil-dawa-pharmacotherapy-_mtl.
15. Ashfaque Ahmad, Farzana Khatoon, Md Sohail, Badrudduja Khan. A thorough concepts and usool-e-ilaj (principles of treatment of post stroke complications, in unani medicine,2019:06(05):10968-10973.